



कुछ अनकहे शेर

राकेश कुमार वर्मा

Poet and Author, www.linesays.org



जिन्दगी की धारा,
किनारा कहा पाती है....
डूबती है कस्तिया,
बस डूबती चली जाती है.....१
उलझे हुए तरानों की,
शाम है यारो...
बदल वो गये,
मुहबत अपनी बदनाम है यारो.....२

उस बेवफा को मुहब्बत की,
सजा ये मिले...
जिसको भी वो चाहे,
उससे भी बड़ा बेवफा निकले.....३

मेरी मुस्कुराहट पे खामोसी के पहरे क्यू है,
हर तेरी और जाने वाले रास्ते पे ही अँधेरे क्यू है..
यू तो कट जाती है तनहा ही जिन्दगी,
फिर तेरे जाने के बाद हम अधरे क्यू है.....४



चाहते मरने लगी है,
दिल में अब वीरानी सी है,
ये तेरे आने जाने का है असर है सायद,
तभी तो दिल में कोई आह ठहरती नहीं है.....५

एक तूफान सा उठता है,
इन हवाओ को रोक लो....
मंजिले चाह से पुखता है,
इन दरारों को रोक लो...
कब्र की श्याही हो,
वो हाथ किस काम का....
ये दिल गवाही से दुखता है,
ऐ मुहब्बत!
मेरी तल्बगी को रोक लो.....६
अब के दूढ़ेंगे हम खुदको,
पुराने जमानो में....
किसी गली में हिम्मत-ऐ-जीने की,
हासील होगी.....

जल चुके हैं रौशनी में तेरे ऐ बेवफा!
अब नयी सूरते हासील होगी.....७

ग़ालिब की बस्ती उजड़ी,
किसको फर्क पड़ गया...
टूटते ही झोपड़े उसके,
अमीर का महल तन गया.....८

राकेश कुमार वर्मा (आवारा बंजारा)